



Anuj Soni

20 Dec 2002

08:25 PM

Bareilly

Model: Web-MyKundli

Order No: 121433301

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 20/12/2002  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 20:25:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 33:50:31 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Bareli  
राज्य \_\_\_\_\_: Madhya Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 23:00:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 78:18:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:16:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 20:08:12 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:02:34 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 02:04:17 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:52:47 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:35:52 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:43:05 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 04:39:00 धनु  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 12:58:18 कर्क

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कर्क - चन्द्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: आर्द्रा - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: राहु  
योग \_\_\_\_\_: शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: श्वान  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मार्जार  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ड--  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: धनु

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1924	मार्गशीर्ष	29
पंजाबी	संवत : 2059	पौष	6
बंगाली	सन् : 1409	पौष	4
तमिल	संवत : 2059	मार्गड़ी	5
केरल	कोल्लम : 1178	धनु	5
नेपाली	संवत : 2059	पौष	5
चैत्रादि	संवत : 2059	पौष	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2059	मार्गशीर्ष	कृष्ण 1

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:04:08  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आर्द्रा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 06:54:05 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : आर्द्रा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 22:09:10 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 12:55:57 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 35:54:41  
भभोग \_\_\_\_\_ : 62:07:23  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : राहु 7 वर्ष 7 मा 19 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : आषाढ़  
तिथि \_\_\_\_\_ : 2-7-12  
दिन \_\_\_\_\_ : सोमवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : स्वाति  
योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 3  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मूषक  
लग्न \_\_\_\_\_ : कर्क  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मीन  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
मंगल \_\_\_\_\_ : मेष  
बुध \_\_\_\_\_ : मकर  
गुरु \_\_\_\_\_ : वृष  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शनि \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
राहु \_\_\_\_\_ : कर्क

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

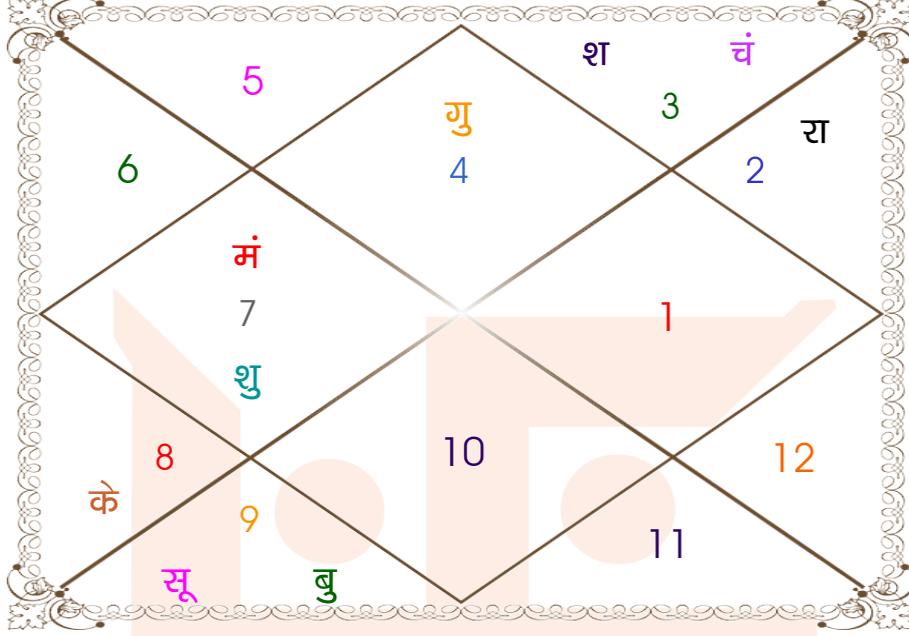
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

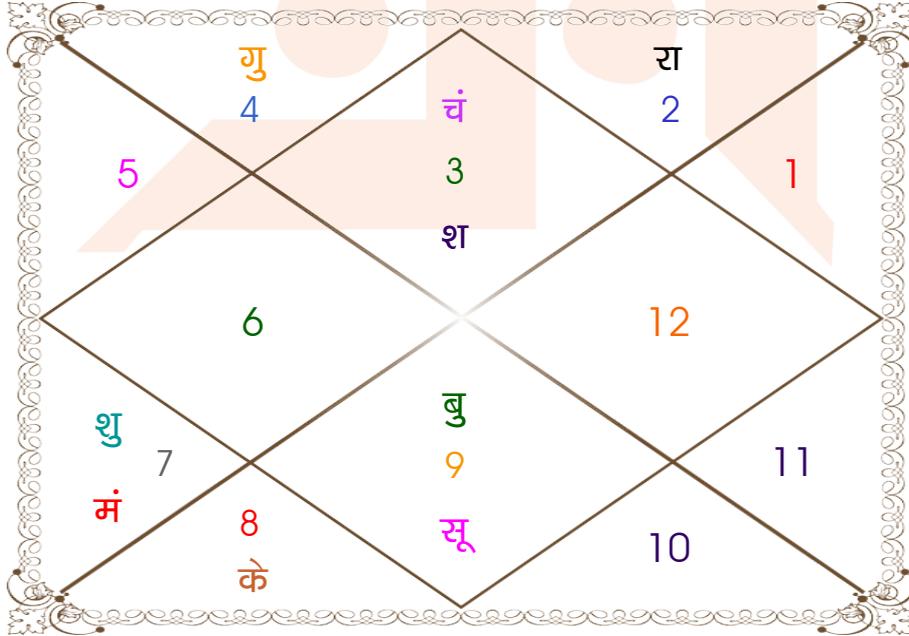
dadajijyotishkendra@gmail.com

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुण्डली

		रा	चं श
			गु ल
बु सू	के	शु मं	

## लग्न कुण्डली

रा		
श चं		
गु ल		
	मं शु	सू बु
	के	

विंशोत्तरी  
राहु 7वर्ष 7मा 19दि  
राहु  
20/12/2002  
10/08/2112

राहु	10/08/2010
गुरु	10/08/2026
शनि	10/08/2045
बुध	10/08/2062
केतु	10/08/2069
शुक्र	10/08/2089
सूर्य	10/08/2095
चन्द्र	11/08/2105
मंगल	10/08/2112

योगिनी  
मंगला 0वर्ष 5मा 2दि  
सिद्धा  
24/05/2023  
24/05/2030

सिद्धा	02/10/2024
संकटा	24/04/2026
मंगला	04/07/2026
पिंगला	23/11/2026
धान्या	24/06/2027
भामरी	03/04/2028
भद्रिका	24/03/2029
उल्का	24/05/2030

## Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

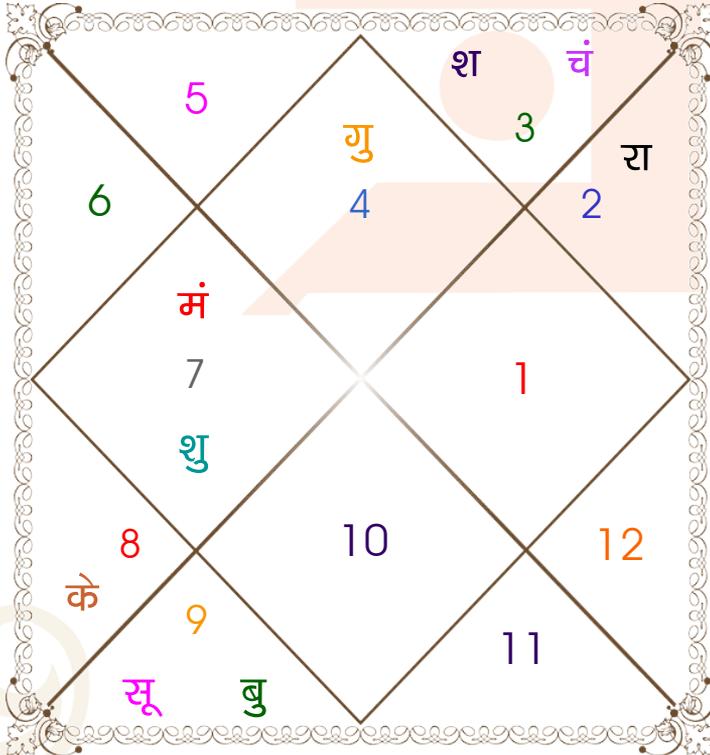
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	12:58:18	316:24:45	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	---
सूर्य			धनु	04:39:00	01:01:04	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	14:20:34	12:53:50	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	मित्र राशि
मंगल			तुला	18:20:28	00:38:38	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	सम राशि
बुध			धनु	23:22:27	01:20:58	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
गुरु	व		कर्क	23:47:05	00:03:08	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	मंगल	उच्च राशि
शुक्र			तुला	19:50:06	00:47:56	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	मूलत्रिकोण
शनि	व		मिथु	01:28:00	00:04:56	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	मित्र राशि
राहु	व		वृष	14:47:05	00:02:14	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	14:47:05	00:02:14	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	01:54:23	00:02:13	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	---
नेप			मक	15:18:06	00:01:50	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	---
प्लूटो			वृश्चि	23:57:52	00:02:16	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	---
दशम भाव			मेष	09:23:51	--	अश्विनी	--	1	मंगल	केतु	शनि	--

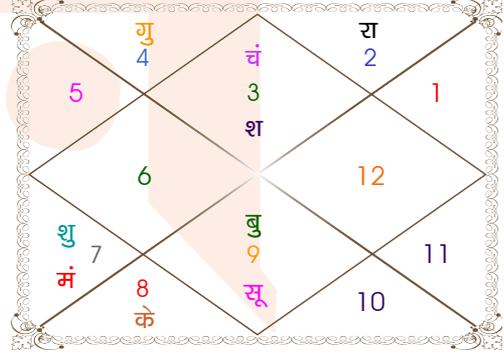
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:53:39

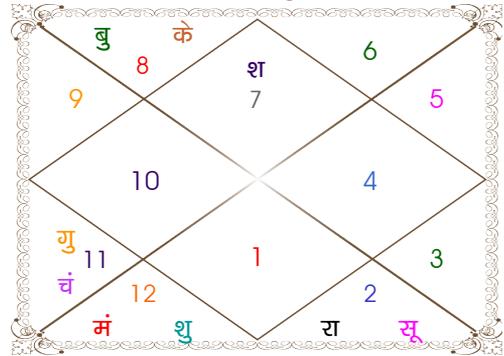
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 27:22:34	कर्क 12:58:18
2	कर्क 27:22:34	सिंह 11:46:49
3	सिंह 26:11:05	कन्या 10:35:20
4	कन्या 24:59:36	तुला 09:23:51
5	तुला 24:59:36	वृश्चिक 10:35:20
6	वृश्चिक 26:11:05	धनु 11:46:49
7	धनु 27:22:34	मकर 12:58:18
8	मकर 27:22:34	कुम्भ 11:46:49
9	कुम्भ 26:11:05	मीन 10:35:20
10	मीन 24:59:36	मेष 09:23:51
11	मेष 24:59:36	वृष 10:35:20
12	वृष 26:11:05	मिथुन 11:46:49

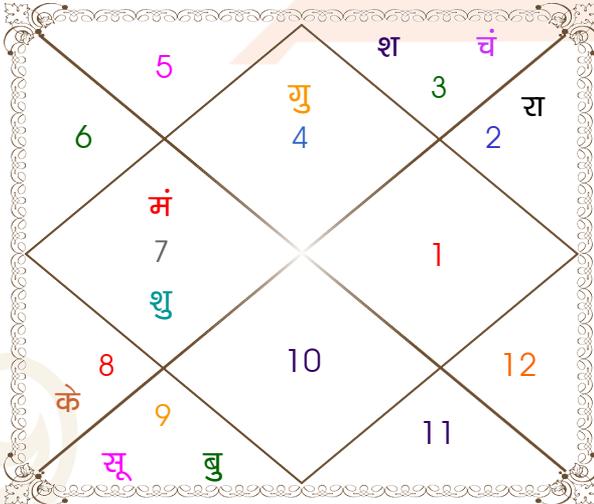
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	12:58:18
2	सिंह	08:15:23
3	कन्या	07:12:09
4	तुला	09:23:51
5	वृश्चिक	12:13:59
6	धनु	13:30:55
7	मकर	12:58:18
8	कुम्भ	08:15:23
9	मीन	07:12:09
10	मेष	09:23:51
11	वृष	12:13:59
12	मिथुन	13:30:55

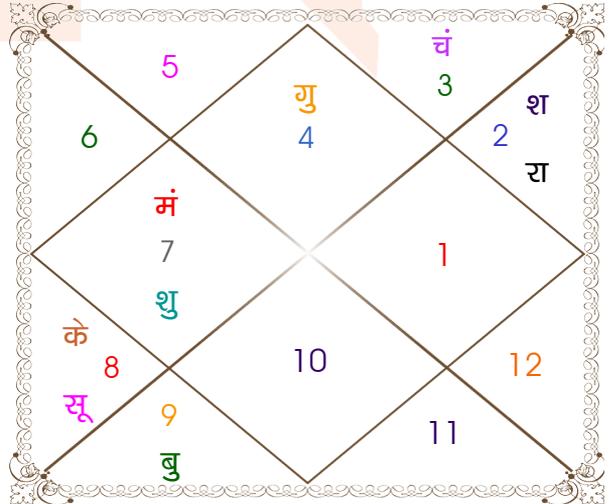
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 7 वर्ष 7 मास 19 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
20/12/2002	10/08/2010	10/08/2026	10/08/2045	10/08/2062
10/08/2010	10/08/2026	10/08/2045	10/08/2062	10/08/2069
00/00/0000	गुरु 27/09/2012	शनि 13/08/2029	बुध 06/01/2048	केतु 06/01/2063
00/00/0000	शनि 10/04/2015	बुध 22/04/2032	केतु 03/01/2049	शुक्र 07/03/2064
20/12/2002	बुध 16/07/2017	केतु 01/06/2033	शुक्र 03/11/2051	सूर्य 13/07/2064
बुध 09/02/2003	केतु 22/06/2018	शुक्र 31/07/2036	सूर्य 09/09/2052	चंद्र 11/02/2065
केतु 27/02/2004	शुक्र 20/02/2021	सूर्य 13/07/2037	चंद्र 08/02/2054	मंगल 10/07/2065
शुक्र 27/02/2007	सूर्य 09/12/2021	चंद्र 12/02/2039	मंगल 05/02/2055	राहु 29/07/2066
सूर्य 22/01/2008	चंद्र 10/04/2023	मंगल 22/03/2040	राहु 25/08/2057	गुरु 05/07/2067
चंद्र 22/07/2009	मंगल 16/03/2024	राहु 27/01/2043	गुरु 01/12/2059	शनि 12/08/2068
मंगल 10/08/2010	राहु 10/08/2026	गुरु 10/08/2045	शनि 10/08/2062	बुध 10/08/2069

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
10/08/2069	10/08/2089	10/08/2095	11/08/2105	10/08/2112
10/08/2089	10/08/2095	11/08/2105	10/08/2112	00/00/0000
शुक्र 09/12/2072	सूर्य 27/11/2089	चंद्र 10/06/2096	मंगल 07/01/2106	राहु 24/04/2115
सूर्य 09/12/2073	चंद्र 29/05/2090	मंगल 09/01/2097	राहु 25/01/2107	गुरु 16/09/2117
चंद्र 10/08/2075	मंगल 04/10/2090	राहु 10/07/2098	गुरु 01/01/2108	शनि 23/07/2120
मंगल 09/10/2076	राहु 28/08/2091	गुरु 09/11/2099	शनि 09/02/2109	बुध 21/12/2122
राहु 10/10/2079	गुरु 16/06/2092	शनि 11/06/2101	बुध 06/02/2110	00/00/0000
गुरु 10/06/2082	शनि 29/05/2093	बुध 10/11/2102	केतु 05/07/2110	00/00/0000
शनि 10/08/2085	बुध 04/04/2094	केतु 11/06/2103	शुक्र 05/09/2111	00/00/0000
बुध 10/06/2088	केतु 10/08/2094	शुक्र 09/02/2105	सूर्य 10/01/2112	00/00/0000
केतु 10/08/2089	शुक्र 10/08/2095	सूर्य 11/08/2105	चंद्र 10/08/2112	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 7 वर्ष 7 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>गुरु - राहु</b> 16/03/2024 10/08/2026	<b>शनि - शनि</b> 10/08/2026 13/08/2029	<b>शनि - बुध</b> 13/08/2029 22/04/2032	<b>शनि - केतु</b> 22/04/2032 01/06/2033	<b>शनि - शुक्र</b> 01/06/2033 31/07/2036
राहु 26/07/2024 गुरु 20/11/2024 शनि 07/04/2025 बुध 10/08/2025 केतु 30/09/2025 शुक्र 23/02/2026 सूर्य 08/04/2026 चंद्र 20/06/2026 मंगल 10/08/2026	शनि 31/01/2027 बुध 06/07/2027 केतु 08/09/2027 शुक्र 09/03/2028 सूर्य 03/05/2028 चंद्र 02/08/2028 मंगल 05/10/2028 राहु 19/03/2029 गुरु 13/08/2029	बुध 30/12/2029 केतु 25/02/2030 शुक्र 08/08/2030 सूर्य 26/09/2030 चंद्र 17/12/2030 मंगल 13/02/2031 राहु 10/07/2031 गुरु 18/11/2031 शनि 22/04/2032	केतु 15/05/2032 शुक्र 22/07/2032 सूर्य 11/08/2032 चंद्र 14/09/2032 मंगल 08/10/2032 राहु 07/12/2032 गुरु 30/01/2033 शनि 04/04/2033 बुध 01/06/2033	शुक्र 10/12/2033 सूर्य 06/02/2034 चंद्र 14/05/2034 मंगल 20/07/2034 राहु 10/01/2035 गुरु 13/06/2035 शनि 13/12/2035 बुध 25/05/2036 केतु 31/07/2036
<b>शनि - सूर्य</b> 31/07/2036 13/07/2037	<b>शनि - चंद्र</b> 13/07/2037 12/02/2039	<b>शनि - मंगल</b> 12/02/2039 22/03/2040	<b>शनि - राहु</b> 22/03/2040 27/01/2043	<b>शनि - गुरु</b> 27/01/2043 10/08/2045
सूर्य 18/08/2036 चंद्र 16/09/2036 मंगल 06/10/2036 राहु 27/11/2036 गुरु 12/01/2037 शनि 08/03/2037 बुध 26/04/2037 केतु 16/05/2037 शुक्र 13/07/2037	चंद्र 30/08/2037 मंगल 03/10/2037 राहु 29/12/2037 गुरु 16/03/2038 शनि 16/06/2038 बुध 06/09/2038 केतु 09/10/2038 शुक्र 14/01/2039 सूर्य 12/02/2039	मंगल 07/03/2039 राहु 07/05/2039 गुरु 30/06/2039 शनि 02/09/2039 बुध 29/10/2039 केतु 22/11/2039 शुक्र 28/01/2040 सूर्य 18/02/2040 चंद्र 22/03/2040	राहु 26/08/2040 गुरु 11/01/2041 शनि 25/06/2041 बुध 20/11/2041 केतु 19/01/2042 शुक्र 12/07/2042 सूर्य 02/09/2042 चंद्र 28/11/2042 मंगल 27/01/2043	गुरु 31/05/2043 शनि 24/10/2043 बुध 03/03/2044 केतु 26/04/2044 शुक्र 28/09/2044 सूर्य 13/11/2044 चंद्र 29/01/2045 मंगल 24/03/2045 राहु 10/08/2045
<b>बुध - बुध</b> 10/08/2045 06/01/2048	<b>बुध - केतु</b> 06/01/2048 03/01/2049	<b>बुध - शुक्र</b> 03/01/2049 03/11/2051	<b>बुध - सूर्य</b> 03/11/2051 09/09/2052	<b>बुध - चंद्र</b> 09/09/2052 08/02/2054
बुध 12/12/2045 केतु 02/02/2046 शुक्र 28/06/2046 सूर्य 11/08/2046 चंद्र 23/10/2046 मंगल 14/12/2046 राहु 25/04/2047 गुरु 20/08/2047 शनि 06/01/2048	केतु 27/01/2048 शुक्र 28/03/2048 सूर्य 15/04/2048 चंद्र 15/05/2048 मंगल 05/06/2048 राहु 30/07/2048 गुरु 16/09/2048 शनि 12/11/2048 बुध 03/01/2049	शुक्र 24/06/2049 सूर्य 15/08/2049 चंद्र 09/11/2049 मंगल 08/01/2050 राहु 13/06/2050 गुरु 29/10/2050 शनि 10/04/2051 बुध 04/09/2051 केतु 03/11/2051	सूर्य 19/11/2051 चंद्र 15/12/2051 मंगल 02/01/2052 राहु 17/02/2052 गुरु 30/03/2052 शनि 18/05/2052 बुध 01/07/2052 केतु 19/07/2052 शुक्र 09/09/2052	चंद्र 22/10/2052 मंगल 21/11/2052 राहु 07/02/2053 गुरु 17/04/2053 शनि 08/07/2053 बुध 19/09/2053 केतु 19/10/2053 शुक्र 13/01/2054 सूर्य 08/02/2054

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 7, 8, 9
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

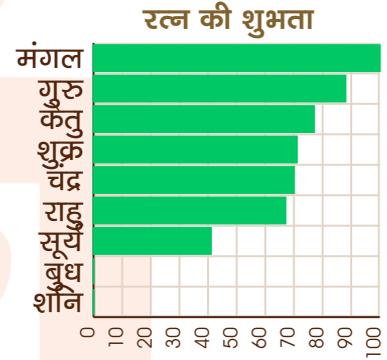
dadajijyotishkendra@gmail.com

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	88%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	77%	सन्तति सुख, सुख
हीरा	शुक्र	71%	सुख, धनार्जन
मोती	चंद्र	70%	कम खर्च, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	67%	धनार्जन, सुख
माणिक्य	सूर्य	41%	शत्रु व रोग, धन हानि
पन्ना	बुध	0%	शत्रु व रोग, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	10/08/2010	16%	58%	88%	0%	88%	77%	0%	80%	64%
गुरु	10/08/2026	52%	77%	100%	0%	100%	58%	0%	67%	77%
शनि	10/08/2045	16%	58%	88%	0%	88%	77%	0%	73%	64%
बुध	10/08/2062	52%	58%	100%	0%	88%	77%	0%	67%	77%
केतु	10/08/2069	16%	58%	100%	0%	88%	77%	0%	55%	89%
शुक्र	10/08/2089	16%	58%	100%	0%	88%	83%	0%	73%	83%
सूर्य	10/08/2095	58%	77%	100%	0%	94%	58%	0%	55%	64%
चंद्र	11/08/2105	52%	83%	100%	0%	88%	71%	0%	55%	64%
मंगल	10/08/2112	52%	77%	100%	0%	94%	71%	0%	55%	83%

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/12/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 -----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

#### फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ

#### क्षेत्र

कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
पराक्रम
दम्पति
धनार्जन

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

### Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

### **Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

## मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

## बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

## गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

## शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

## शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

## राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

## केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु  
( 10/08/2010 - 10/08/2026 )

गुरु की महादशा की अवधि सोलह वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 10/08/2010 को आरम्भ और 10/08/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु लग्न में स्थित है। यह शरीर रचना, रूपकार, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रतिष्ठा, सामान्य रहन-सहन, चेहरे के ऊपरी भाग, दीर्घ आयु और सामान्य जीवन की संरचना के प्रति विचार का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित होकर पंचम, सप्तम तथा नवम भावों को देखता हुआ उनपर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष की यह दशा शान्ति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की दशा होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी अपने ही भाव में स्थित होकर भाव को शक्ति दे रहा है। फलतः इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप अपने सामान्य कार्यों का सम्पादन करने की स्थिति में होंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति और पंचम तथा नवम (सप्तम के अतिरिक्त) भाव अर्थात् दो त्रिकोणों पर उसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आप भोग-विलास की वस्तुओं पर व्यय भी करेंगे।

व्यवसाय :

प्रथम भाव में स्थित गुरु के कारण आप अपने ही प्रयास से अपना जीविकोपार्जन करेंगे। आप जिस किसी भी व्यवसाय में हों, उन्नति करेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, जीवन में उन्नति करेंगे और मकान, वाहन आदि सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आपकी शिक्षा तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति तथा पंचम, सप्तम तथा नवम भावों अर्थात् भूत-कर्म भाव, जीवन संगी भाव और सुख कर्म पर उसकी दृष्टि के कारण आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सौहार्दपूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके माता-पिता आपके जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्ञान के प्रति आपकी खोज के कारण आप अपनी इच्छा के अनुरूप साहित्य और धर्म की पुस्तकों का अध्ययन करेंगे।

**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

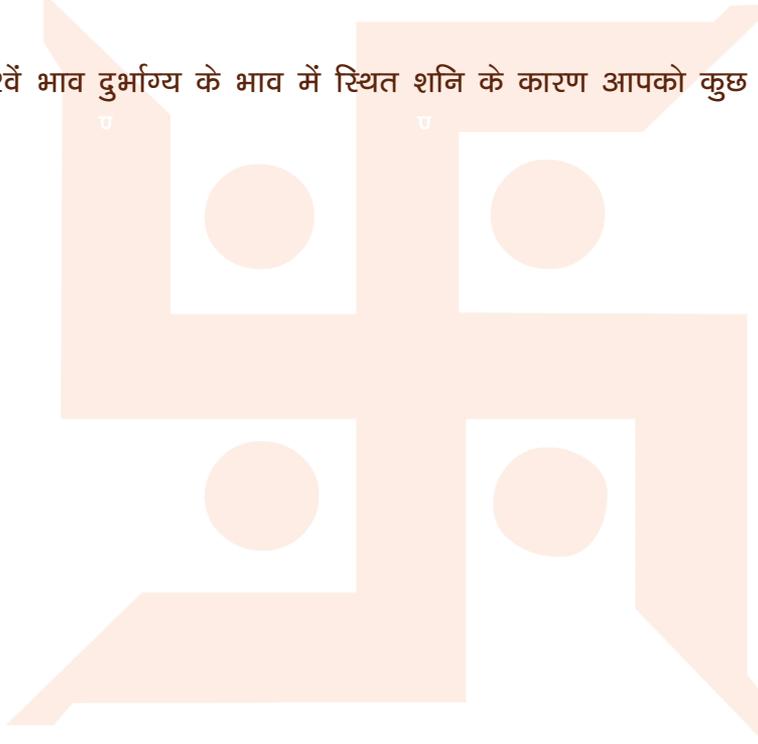
dadajijyotishkendra@gmail.com

**महादशा :- शनि**  
**( 10/08/2026 - 10/08/2045 )**

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 10/08/2026 को आरम्भ और 10/08/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 12वें भाव में स्थित है। यह एक खतरनाक ग्रह है। यह लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है। जतक के धैर्य की परीक्षा लेना इसकी प्रवृत्ति होती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 12वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि-द्वितीय, षष्ठम तथा नवम भाव पर है और यह उनके कार्यों को प्रभावित करता है। 12वां भाव, जिसमें यह ग्रह स्थित है, क्षति और बाधा, फिजूलखर्च, उदासी और चाकरी, दान, पुण्य, परिवार से अलगाव, कंजूसी और दुर्भाग्य, कार वास, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, अपकीर्ति, अपयश, बारीं आँख, शयन-सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

12वें भाव दुर्भाग्य के भाव में स्थित शनि के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य समस्या



**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

हो सकती है।

**धन-सम्पत्ति :**

12वें भाव में स्थित महादशा के स्वामी शनि के कारण आपको इस दशा के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु, चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर भी मिलेंगे। आप विदेश में अपना भाग्य आजमा सकते हैं, किन्तु आपको अनेक बाधाओं के कारण सफलता नहीं मिलेगी।

**व्यवसाय :**

आप भ्रमणशील हैं और आपके जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे इसलिए आपके व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव आएंगे और आपकी हानि होगी। दिमागी स्तर पर आप सतर्क नहीं रहेंगे और सुस्त दिमाग होने के कारण आपके विभिन्न कार्यों में धन की हानि होगी। आप धार्मिक कार्यों पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप कृषि कार्य भी कर सकते हैं।

**पारिवारिक कार्य :**

आपके पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। असन्तोष तथा बिखराव के कारण आपका पारिवारिक जीवन असन्तुलित हो सकता है जिससे आपका जीवन कष्टमय हो जाएगा। आपकी पत्नी आपकी सहयोगी हो सकती हैं, पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जा सकती है कि आपको परिवार से दूर जाना पड़े जिसके फलस्वरूप आप परिवार से अलग भी हो सकते हैं।

**शिक्षा/प्रशिक्षण :**

शिक्षा की दृष्टि से यह दशा बहुत अनुकूल नहीं है।

**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

**अंतर्दशा :- शनि - शनि  
( 10/08/2026 - 13/08/2029 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/08/2026 को प्रारंभ होकर 10/08/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 10/08/2026 को प्रारंभ होकर 13/08/2029 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। द्वादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 2, 6, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको संयम और धैर्य से काम करना होगा क्योंकि शनि आपकी परीक्षा ले सकता है। व्यापार में धनहानि संभव है। आलस्य की भावना रह सकती है; शत्रु बढ़ सकते हैं। गुपचुप पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में, सोने की अंगूठी में नीलम, शनिवार के दिन, रात्रिशयन से पूर्व, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर, प्रार्थना के उपरांत धारण करें।

**अंतर्दशा :- शनि - बुध  
( 13/08/2029 - 22/04/2032 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 10/08/2026 को प्रारंभ होकर 10/08/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 13/08/2029 को प्रारंभ होकर 22/04/2032 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठ भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बुध बुद्धि का कारक है।

इस अवधि में यद्यपि समाज में आपकी प्रतिष्ठा होगी मगर आप झगड़ालू, आलसी और कटु वचन बोलने वाले हो सकते हैं। इस कारण बहुत से शत्रु हो सकते हैं, स्नायुतंत्र प्रभावित हो सकता है। स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है। सावधानी आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**Shri Dadaji Jyotish Kendra**

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com